दिशा प्रकाशन
138/16, त्रिनगर, दिल्ली-110 035

मेरी कहानियाँ

मुद्राराक्षस

मूल्य : बाईस रुपये
सर्वाधिकार : मुद्राराक्षस
प्रथम संस्करण : 1983
प्रकाशक : दिशा प्रकाशन, 138/16, त्रिनगर, दिल्ली-35
आवरण : पाली
रेखाचित्र : रणवीरसिंह बिष्ट
मुद्रक : रुचिका प्रिण्टर्स, दिल्ली-110032

MEREE KAHANIYAN (Hindi Short Stories)
by Mudrarakshas
Rs. 22.00

डॉ० धर्मवीर भारती को

दिया : "बदतमीज, मैं क्या लँगड़ी हूँ ? उठ नहीं सकती ?"

ड्राइवर अचानक उछलकर अलग खड़ा हो गया।

पप्पी अब खड़ी हो गयी थी। एक बार शायद दुबारा उसने देखना चाहा, पर सिर्फ घूमकर गाड़ी की तरफ लँगड़ाती हुई लौट चली।

ड्राइवर पीछे-पीछे आकर अगली सीट पर बैठ गया। गाड़ी स्टार्ट हो गयी, लेकिन पप्पी का खून इस तेजी से दौड़ रहा था कि उसने कार की आवाज ही नहीं सुनी। गाड़ी बँगले पर लौट आयी। पप्पी चुपचाप उतरकर सीधे अपने कमरे में चली गयी। एक बार शायद उसके पैर बत्ती जलाने के लिए आगे बढ़े, लेकिन फिर वह ज्यों-की-त्यों बिस्तर में धँस गयी। जैसे धुँधलके में कोई ख्वाब चौंका हो और फिर सो गया हो, इस तरह कमरा खामोश हो गया।

बाहर से छनकर खिड़की के जरिये आती अभी बाकी दिन की थोड़ी-सी रोशनी में दीवार पर लगा नाटकीय सजावटवाला जापानी मुखौटा अपने भद्दे होंठ बिदोरकर इस खामोशी को और वीभत्स बना रहा था।

□

डरा हुआ

मैं भाग आया हूँ। युद्ध की घाटियों में अपनी बन्दूक फेंककर मैं जितना भागा गया दूर-से-दूर भागता आया हूँ। पर अब यहाँ सैकड़ों मील दूर इस गाँव में मुझे नींद नहीं आ रही। इतनी भयानक खामोशी मुझसे सही नहीं जाती। लगता है जैसे मैं सर्द हो जाऊँगा, लहू जम जायगा। युद्ध की सनसनी और दानव के किटकिटाते दाँतों की तरह लगातार बजती गोलियों के बीच नींद लेने का मौका मिलता था तो नींद जरूर आ जाती थी। पर यहाँ कोई डर नहीं, सनसनी नहीं, दानवी दांतों की किटकिटाहट भी नहीं, इसलिए डर लगता है। सन्नाटा तब होता है जब बन्दूकें चुप हो जाएँ और बन्दूकें तब चुप होती हैं जब आदमी चुप हो जाए। सोते-सोते चौंक पड़ता हूँ कि शायद मरने वाला ही नहीं मारने वाला भी एक-एक इन्सान मर गया। इसलिए मैं यहाँ यह निर्भय रात से डर जाता हूँ।

मैं, सचमुच, डरकर नहीं भागा। मैं निडरता से भाग कर आया हूँ, निडरता की उस हद से जहाँ खतरनाक इन्सान को मारते मुझे एक हिचक भी कभी नहीं हुई।

सबसे पहली मौत मेरे हाथों तब हुई जब मैं कैम्प के नहर वाले किनारे पर पहरा दे रहा था।

वह मेरा दोस्त था, एक बैरक में आस-पास पलँग पर सोने वाला ! उसने शाम बताया था कि वह बहुत बेचैन है क्योंकि यहीं नहर के पार उसकी बीवी का घर है। रात को चार घण्टे के पहरे पर मैं था इसलिए

उसने मेरी खातिरदारी की। और मेरे देखते वह तारों को फाँद कर अँधेरे में खो गया। मैं बराबर टहला किया और न जाने क्यों मुझे बेहद सर्दी लगने लगी। गरम कपड़ों के गट्ठर के बावजूद मेरी हड्डियों के जोड़ काँपने लगे। मैं राइफल को जोर से दबाए आहिस्ता-आहिस्ता यों चल रहा था जैसे मेरे पैरों के नीचे जमीन नहीं कोई खौफनाक राक्षस की पीठ थी जिस पर मैं चल रहा था और मेरी आहट से वह जग सकता था, मुझे मार सकता था। झींगुरों की आवाज तेजी से घूमती किसी इन्सान को फाँसी देने वाली रहस्यमय काली पंखियों की गूँज-सी लग रही थी। अँधेरे में पत्थरों को टटोलते हुए मुझे एक काली आकृति दीखी। यह मेरा दोस्त था। पर मुझे यों लगा कि मैं बुरी तरह चौंक गया हूँ। दिल में जैसे किसी ने एक सलाख चुभा दी और वह तड़पने लगा। आकृति ने हाथ ऊपर उठाकर मुझे इशारा किया। पर तभी वह तारों से आधा ही निकल पाया था कि मेरी बन्दूक बोल पड़ी। खामोशी से डर लग रहा था और मैंने दोस्त का खून कर दिया था।

एक साथ चारों तरफ के पहरे पर बन्दूकें गरज गयीं। सीटियों और आदमियों के शोर के साथ मुझे लेफ्टिनेण्ट सराह रहा था कि मैंने अपना कर्तव्य पूरा किया।

ड्यूटी खत्म होने के बाद मुझे खूब नींद आ गयी क्योंकि मैं बुरी तरह थक गया था। दूसरे दिन कैम्प के बाहर एक जवान औरत घूमती मिली। उसने मिन्नतें कीं कि उसका मर्द यहाँ है, बुला दो वह तारों के इधर से ही बात कर लेगी, पोटली में किसी चीज की घर की बनी मिठाई भर उसको देकर चली जायगी।

मेरा साथी हँसा, मैं भी हँस दिया। दोनों मिलकर उसे कैम्प से थोड़ी दूर सूखी नहर के पुल के पास ले गये। औरत को मजबूर करना शायद बहुत आसान है। मेरे दोस्त ने उसे समझाया कि उसका पति रात को भागा था अगर शिकायत कर दी गयी तो गोली मार दी जायगी। मजबूर औरत की आँसू भरी आँखों को नजरन्दाज कर हम दोनों उसे पुल के नीचे ले गये। और पुल से बाहर आये तो नहर की मिट्टी में अपनी-अपनी संगीनों का खून साफ कर चुके थे। औरत जैसे एक इन्जेक्शन की दवा भरी शीशी थी, जिसे

तोड़कर दवा निकाल ली और काँच की वह नली फेंक कर जूते से चूर कर दी।

अगली शामें फिर ज्यों-की-त्यों गुजरने लगीं। जैसे फाँसी देने से पहले कैदी को मुँहमाँगी चीज देने का रिवाज है उसी तरह फ्रण्ट पर जाने से पहले सिपाही को साँड़ हो जाने की इजाजत होती है।

हफ्ते-भर बाद हम ट्रकों में लद गये। फौज में दोस्त बदल जाते हैं दोस्ती नहीं बदलती। ट्रक पर बाजू से सटकर बैठे नौजवान को मुक्का मार कर मैंने सचेत किया, अपनी दोस्ती उसे सौंप दी।

'ओए ! तेरी ससराल कहाँ है !' मैंने पूछा,

'बोलो हम सबकी ससराल कहाँ है !' उसने संशोधन किया और जोर से हँसने लगा।

उजाला साफ हो आया था और ट्रकों की रौंद के साथ सिपाही की गालियाँ और कौओं की चीखें होड़ ले रही थीं। ढाई घण्टे के इस मुतवातिर सफर के बीच ट्रकों की रौंद और गालियों के अलावा कोई चीज हमारे सामने नहीं थी। सोचने की हमें फुरसत न थी वरना अँधेरे-अँधेरे किसी अनजान खौफनाक जगह के लिए यह सफर किसी नरक यात्रा और भूतों-पिशाचों की हमजोली से कम न लगता।

गाड़ी ने एकदम ब्रेक किया। गर्द का मोटा-सा बबूला ट्रक पर पीछे से धँस पड़ा। सारी गाड़ियाँ रुक गयी थीं। सुबह अभी फूटी नहीं थी। सिपाही गालियाँ उछालने लगे।

मालूम हुआ गाड़ियों को अविलम्ब किनारे उतार देना होगा। युद्ध की सीमा आधे घण्टे के अन्दर-अन्दर भीतर खिसक चुकी थी।

युद्ध से इन्सान शायद डर जाता है इसीलिए मार बैठता है। मार डालने के बाद युद्ध ठहर जाता है पर तब और ज्यादा डर लगता है। दुश्मनों के मर जाने के बाद मैं दावे के साथ कह सकता हूँ कि सिपाही ने अपनी बन्दूक और भी ज्यादा मजबूती से पकड़ी है और जब तक उसे थकावट का एहसास नहीं हुआ, दुश्मनों के ध्वस्त हो जाने के बावजूद अपनी बन्दूक नीची नहीं की। सिपाही की दहशत की हर थर्राहट गोलियों की बौछार के रूप में

फूटती है।

हम चार हैं चट्टानों की दरार में धँसकर लेटे। सामने गहरा ढाल है। ढाल के नीचे घाटी है और दूसरी पहाड़ी शुरू हो जाती है। दूसरी पहाड़ी की आड़ से आसमान पर एक धुँधली-धुँधली रोशनी चमकती है शायद गाँव कोई जल रहा होगा। घाटी से टैंकों के गुजरने की आशा है। मेरा एक साथी धीमे-धीमे गालियाँ बक रहा है और दूसरा आसमान की तरफ देख-देख कर औरतों के चुटकुले सुना रहा है। तीसरा अफसोस जाहिर करता है कि अगर हम नरभक्षी होते तो दो दिन से सूख-सूखकर काटनेवाली भूख मिटाना आसान होता। मुझे लगता है यह एक अच्छा मजाक है। हम इन्सान का गोश्त नहीं खा सकते क्योंकि इन्सानियत के खिलाफ है लेकिन जितने इन्सान मारे जाएँ उतनी ही खुशी होगी।

मुझे इस युद्ध में मजा आता है क्योंकि इन्सान सीधे किसी इन्सान को तकलीफ नहीं पहुँचाता। सैकड़ों आदमी मारे जा चुके होंगे इसी घाटी के किनारे लेकिन यह युद्धभूमि है कि कहीं गिद्ध और सियार नहीं झपटते। मरते इन्सानों का चीत्कार नहीं गूँजता। यह एक खेल है जहाँ जख्मों के होंठ तालियाँ पीटते हैं और मरी हुई लाशें परियों की कहानियाँ सुनाती हैं। रात को अँधेरा नहीं होता। हर हिलता इन्सान का निशान दूर से देखकर ही उड़ाया जा सकता है। लेकिन हमें मजा आता है क्योंकि डर लगता है। हम मुहब्बत के चुटकुले उछालते हैं क्योंकि डर जाते हैं और गालियाँ भी इसीलिए देते हैं कि खामोशी से दहशत होती है। हम मजा लेते सिर्फ इस डर को दूर करने के लिए कि हम मर नहीं गये। हमें किसी ने मार नहीं डाला इसलिए हमें मजा आता है और हम मेम की बातें करते हैं। मर जाने का डर छूटे इसलिए गुनगुनाते भी हैं गो कि यह गुनगुनाना ऐसा होता है जैसे हम मुँह में घुस गयी धूल को थूक रहे हों। सिपाही जब निडर हो जाय तो एकदम खामोश हो जाता है, लाश की तरह बिना हरकत किए दुबका रह सकता है पर जब वह डरता है तब हिलता है, करवट लेता है, गुनगुनाता और गाली बकता है, उछलकर दहाड़ती तोप के नीचे से झपटता है! हम बेहद डर रहे हैं और बहुत मजा आ रहा है।

हमारी बन्दूकों की संगीनें उतारकर बिजूका लगाया गया है। रात की

खामोशी जैसे बहुत मजबूत काले जूते पहने टहलती है—ट्रिट्-ट्रिट-ट्रिट—। घाटी में घरघराहट की एक वहशी आवाज खामोशी के जूतों की इसकरक से ऊपर उठती है। टैंक गुजरते हैं, सिर्फ दो। निशाना लेकर बिजूके फायर कर दिए जाते हैं। लगता है यह विस्फोटक बन्दूक की चोटी को नहीं मेरे सीने की धकेल कर छूटा है। एक क्षण के लिए यह नहीं पता चलता कि टैंक ध्वस्त हुआ या हम और दोनों टैंकों में आग लगी दीखती है।

हमें अब आगे झपटना है। यह साहस का काम है। पिछला टैंक जलते-जलते भी गोलियाँ चला रहा है। गोलियाँ अन्धाधुन्ध चल रही हैं घूम-घूम कर। मारनेवाला हमारी जगह ठीक-ठीक नहीं देख पाया है शायद पर दिशा वह जरूर जान गया है। दस मिनट से ज्यादा गोलियाँ नहीं चल पातीं। बड़े धमाके के साथ वह टैंक भी ध्वस्त हो जाता है। घाटी भयानक रूप से निस्तब्ध हो जाती है। स्तब्धता से डर लगने लगता है। हम आगे बढ़ते हैं।

मेरा नौजवान साथी तीन-चार टीन के बर्तन लाता है और जमीन पर दे मारता है। उसकी गालियाँ फिर बुलन्द हो जाती हैं। दूसरा साथी एक तीन पाये के टूटे पलंग पर लेटे-लेटे घरवाली की दास्तान सुनाता है। तीसरा साथी उन दो मशीनगनों को लत्ते से पोंछ रहा है जो यहाँ अनायास मिल गयीं।

दिन बहुत लम्बा और उकताहट भरा होता है। हम सभी भूखे हैं और हमारे पास गोलियों की जंजीरों के अलावा और कुछ नहीं। तीसरा साथी मशीन साफ करते-करते थककर बैठ गया फिर एक गोला उठाकर बोला : 'मान लो यह नारियल है और इसको तोड़कर हम नारियल खायेंगे।'

हमें पता था कि वह गोले को फोड़ने की हरकत नहीं करेगा लेकिन फिर भी मैंने उससे गोला छीन लिया। वह खाँस-खाँस कर हँसने लगा। सारा दिन गुजर गया। बहुत वीरान दिन। धूप किसी लम्बी, तेज और कानों को छेद जानेवाली सीटी की आवाज की तरह गूँजती हुई दूर चली गयी। पिछले दो दिनों से हमें आशा होती है कि शायद रात बढ़ने पर कोई जंगली जानवर खाने की तलाश में इस ध्वस्त गाँव के खण्डहरों में आ जाय

और हम उसे मार कर भूख मिटा सकें। लेकिन रात के अलावा और कुछ भी नहीं आता हमें नींद भी नहीं आती और रात बढ़ जाने पर मेरा तीसरा साथी फिर वही वीभत्स मजाक करता है हथगोले को नारियल का गूदा पाने के लिए तोड़ देने का। दूसरा सिपाही उससे गोला छीन लेता है और गाल की हड्डी पर एक झापड़ मार कर अलग आ बैठता है। मार खाकर वह हँस रहा है या रो रहा है यह नहीं पता चलता। हम सबके मुँह खट्टे हो गये हैं, चेहरे विकृत हो सकते हैं हँस नहीं सकते।

बाहरी दीवार से सटकर खड़े-खड़े मैं अँधेरे में निरुद्देश्य देख रहा हूँ। पीछे से मेरे कन्धे पर किसी ने हाथ रखा और मैं इतनी जोर से चौंका कि लड़खड़ा गया। वही नौजवान साथी। मुझे गुस्सा आता है कि कुन्दे से इसका माथा फोड़ दूँ। पर मेरे चेहरे की रेखाएँ विकृत होकर रह जाती हैं।

'वे इधर नहीं आयेंगे।'—वह कहता है।

ज्यादा बोलने को हमारे पास कुछ नहीं। सिवा इन्तजार के हमारे पास कुछ नहीं। जंगली जानवर का इन्तजार या दुश्मनों का इन्तजार। इधर हारी हुई जमीन को रौंदकर वे लौट आयें तो शायद हमारी विवशता की सख्त परत टूट जाय। हमें यह डर नहीं रहा कि वे लौट आयेंगे; सबसे ज्यादा दहशत यों होती है कि शायद दुश्मन इधर नहीं आयेगा। अगर हम उन्हें चीखकर आवाज दें या आदर से निमन्त्रित करें तब भी वे आयेंगे नहीं।

सारी रात की स्तब्धता को झेलने के लिए हम चारों शायद बात करते हैं लेकिन एक-दूसरे से नहीं सिर्फ अपने-अपने दिल से। लेटे-लेटे करवट लेते हैं, उँगलियाँ तोड़ते हैं या आँखों पर हथेलियाँ दबाकर खांसते हैं और सिर्फ अपने से बात करते रहते हैं। हमें यह महसूस ही नहीं होता कि कोई दूसरा भी यहाँ है क्योंकि होने की कोई सार्थकता नहीं। हम चार हैं पर मायूस हैं, भूखे हैं, डरे हैं और उपेक्षित भी हैं!

मैं सोचता हूँ कि दुश्मनों की एक टुकड़ी इधर से गुजरती हुई दीखे। वे हमें नहीं देखेंगे तब हम एक सफेद कपड़ा बन्दूक में बाँधकर उन्हें बुलायेंगे। हम उनसे बात करेंगे। मैं यह भी कह सकता हूँ कि उनके इन्तजार में यह दिन और रात किस तरह पहाड़ की तरह कटने नहीं आते थे। किस तरह

रात-रात भर आँखें बिछाकर हमने चाहा कि तुम आ जाओ और ध्वस्त हुए मिट्टी के खण्डहरों की यह खामोशी टूट जाय, हमें नये साथी मिल जाएँ। अपनी प्रियतमाओं की कहानियाँ जो हम अपने इन्हीं चार के बीच दुहरा-दुहरा कर ऊब चुके थे ताजे रस के साथ तुम्हें सुनायें। फिर हम सब कहें कि भूखे हैं पर फिर भी किसी लोकगीत को गाकर दिन गुजार देंगे। फिर जैसे कोई प्रेमी अपनी प्रियतमा से कहे कि तू अब कहीं न जा ताकि इन्तजार की बेचैन रातें फिर न आयें उसी तरह मैं तुम्हारी हथेली पकड़ लूँ और तुम वादा करो—नहीं मेरे अजीज मैं तुम्हें छोड़कर कहीं नहीं जा सकता। अकेलापन सहा नहीं जाता। इसलिए हम सब एक-दूसरे से अलग न होने के वादे करते लिपट जायेंगे, एक-दूसरे को बाहों में उछालेंगे—मेरे अजीज।

काश कोई दुश्मनों की टुकड़ी ही इधर आ निकले—वह दुश्मन है पर लगता है यह बहुत जाना पहचाना है और बहुत बेताब होकर हमें उसका इन्तजार है···

मेरा एक साथी चीखता है। टूटी दीवार से झाँककर मैं अन्दर देखता हूँ। उफ भयानक। वही तीसरा अधेड़ साथी हथगोला लिए लड़खड़ा रहा है। बाकी दोनों तेजी से उस पर झपट रहे हैं। एक क्षण भी नहीं गुजरता कि वह हथगोले का लिवर दाँत से खींच लेता है। पलक मारते ही इस खौफनाक अनहोनी का खयाल कौंधता है। झन्नाहट के साथ आँखें भिंच जाती हैं। स्वभाव जो कुछ कर सकता है करता है और मैं आँखें खोलता हूँ। मुझे विश्वास नहीं होता कि मैं देख सकूँगा पर मुझे दीख पड़ता है। एक बड़े उधड़े ढूह के अलावा और कुछ नहीं है। मशीनगनें भी न जाने कहाँ गयीं। रात फिर उतनी ही खामोश है। धुआँ और धूल की चौड़ी-चौड़ी ढीली-सी पूँछ जैसी ऊपर हवा में लहरा रही है। नहीं कह सकता कि धक्के ने मुझे दूर फेंक दिया या हम सबको। मुझे दो लाशें करीब पच्चीस गज दूर पड़ी दीखती हैं। मुझे पता है कि वे मर चुके पर फिर भी देखने का मन होता है लेकिन मैं उठ नहीं सकता।

अब भी मुझे चाह हो रही है कि वह आ जाय जिसका मुझे इन्तजार है। मुझे चोट शायद कहीं नहीं आयी पर फिर भी मैं उठ नहीं सकता क्योंकि शरीर की हड्डियाँ नहीं मन की बाहें टूट गयीं हैं। मुझे दुश्मन का अब भी

इन्तजार···

उन दो लाशों में से एक हिल रही है। मेरा चेहरा विकृत होकर रह जाता है। दुश्मन पुकार पर नहीं आता जो जिन्दा है और यह लाश करवट ले रही है जो मर चुकी। क्या मुझे कोई साथी मिलेगा जो प्रेत होगा। लाश का प्रेत जोर से करवट ले रहा है और मुझे बेहद डर लगता है इसलिए किसी तरह उठकर उस तक पहुँचने की कोशिश करूँगा। और मैं पहुँच भी गया। लेकिन वह प्रेत नहीं सचमुच जिन्दा इन्सान है—वही मेरा नौजवान दोस्त, जखमी साथी। वह मुझे पहचानता है और कराहता है।

मैं अचानक खुशी से उछल पड़ता हूँ। दूर बहुत दूर गोलियाँ चलने की आवाज आती है बहुत धीमी—टक् टक् टक् टक् टक्। जैसे कोई चिरप्रतीक्षित अभिसारिका अपने प्रियतम के द्वार पर हल्के-हल्के दस्तक दे रही हो। सचमुच वह गोलियों की बहुत धुँधली, आहिस्ता सुन पड़नेवाली आवाज ठीक ऐसी ही लग रही है जैसी उसके इशारे की आवाज जो मेरे इन्तजार की आँखों का तारा है।

नौजवान के शरीर को खींचकर मैं पास के एक-दूसरे खण्डहर में आ बैठता हूँ। मेरा जखमी साथी मुझसे पानी माँग रहा है पर मुझे झल्लाहट होती है कि वह रात के इन्तजार की टूट जानेवाली साँकलों के लिए खुश क्यों नहीं। अपने परिचित अनागत अतिथि के ख़ाब को छेड़-छेड़कर मैं देख रहा हूँ जैसे गरीब के हाथ में अशर्फी आ गयी हो और वह उसे उलट-पलट कर देखता रहे।

लेकिन रात गुजर जाती है। मेरा वह प्रिय अतिथि बिना आये ही लौट जाता है। मैं अपने को इससे कहीं ज्यादा तकलीफ पहुँचाना चाहता हूँ जितनी इस बेदर्द दुश्मन ने बिना आये पहुँचायी। अपने साथी के जख्मों के लिए मैं कुछ नहीं करता। उसकी हर कराह पर मैं अपनी बची ब्रेनगन की मैगजीन टटोलता हूँ। दिन सारा गुजर जाता है और कड़वाहट बढ़ती जाती है। अब लगता है कि दुश्मन को मैं प्यार नहीं कर सकता दुश्मन सिर्फ मारा जाना चाहिए। और रात—फिर वही वैसी ही रात और मैं दुश्मन के लिए अपने दिल के कोने में पैदा हुई चाहत को संगीनों से छेद देने की कल्पना करता हूँ।

और ठीक इसी वक्त मेरा नौजवान साथी कराहना बन्द कर देता है। मुझे कोंच कर वह दीवार की दरार की तरफ इशारा करता है। दरार से दूर तक हल्के-हल्के उजाले का सुनसान दिखायी देता है और मैं चौंक जाता हूँ। कोई आठ-दस सिपाही एकदम सावधान आगे बढ़ रहे हैं। मुझे भय लगा? मुझे खुशी हुई? मुझमें घृणा और हिंसा जगी?

हाँ यह सब हुआ। मेरे रोएँ थर्रा गये। साथी बोला—'उन्हें मार दो।'

'हाँ!'—मेरी ब्रेनगन के निशाने से एक भी नहीं बच सकता। मैं निशाना लेता हूँ और खुश होता हूँ। कुछ सैकेण्ड ही बीते होंगे—मेरा साथी कोंचता है—'मार दो!'

वे काली छायाएँ चुपचाप सरकती आती हैं और मुझे लगता है—मुझे लगता है—

मैं घूमा और गन रखकर मैंने साथी को दबोच लिया। वह गलगलाया और एक वहशी बल से मैंने उसका गला दबा डाला।

'नहीं मैं उन्हें नहीं मार सकता!' वे दरवाजे पर अभिसार का इशारा करने आयी छायाएँ हैं, दुश्मन नहीं हैं। वे किसी मुहब्बत के पैगाम के काले हरूफ हैं, दुश्मन नहीं हैं। मैं उन्हें मार नहीं सकता। घूमकर देखता हूँ तो वे छायाएँ आ चुकी हैं।

शायद हर कोई जा चुका। नौजवान दोस्त भी, नारियल को तोड़कर भूख मिटानेवाला साथी भी, महबूब के पैगाम के हरूफ भी और तनहाई से डरकर मुझे भागना होगा, भागना होगा···

□